शिकारी और उसका कुत्ता

लेखक : ब्रायन



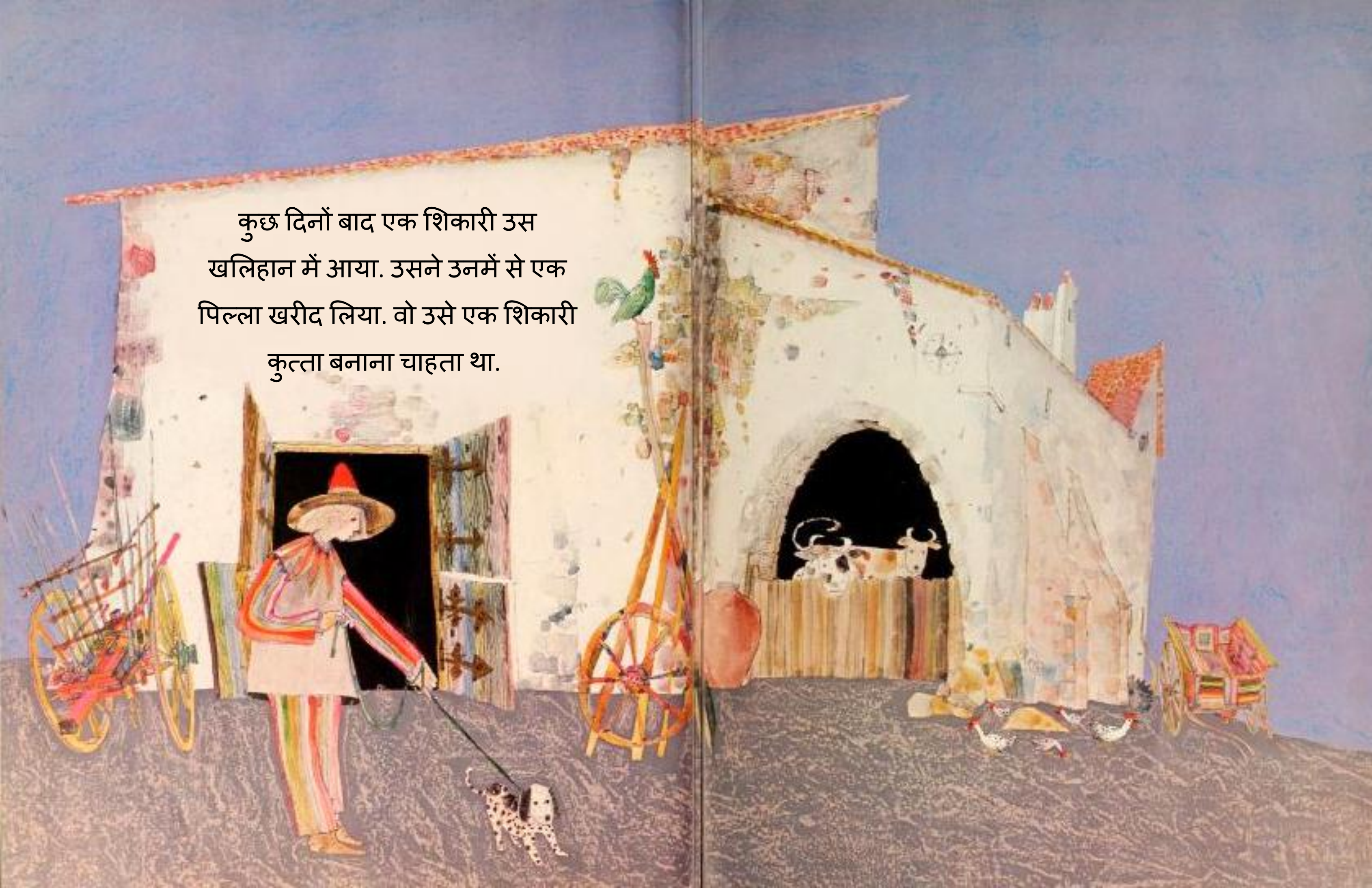


शिकारी और उसका कुत्ता



दूर-दराज़ के गांव के एक खलिहान में एक कुत्ता रहता था. एक दिन उस कुत्ते के तीन बच्चे हुए.





कुछ दिनों बाद एक शिकारी उस खलिहान में आया. उसने उनमें से एक पिल्ला खरीद लिया. वो उसे एक शिकारी कुत्ता बनाना चाहता था.

जब पिल्ला थोड़ा बड़ा हुआ तब शिकारी ने
उसे कुछ करतब सिखाए.

शिकारी एक लकड़ी को दूर फेंकता और फिर
वो कुत्ते से उसे वापिस लाने को कहता.

धीरे-धीरे कुत्ता कई ट्रिक्स सीख गया.
अब वो कच्चे अंडों को बिना तोड़े अपने मुंह में ले जा सकता था.

"जल्दी ही तुम मेरे साथ शिकार करने को तैयार हो जाओगे,"
शिकारी ने कुत्ते से कहा.



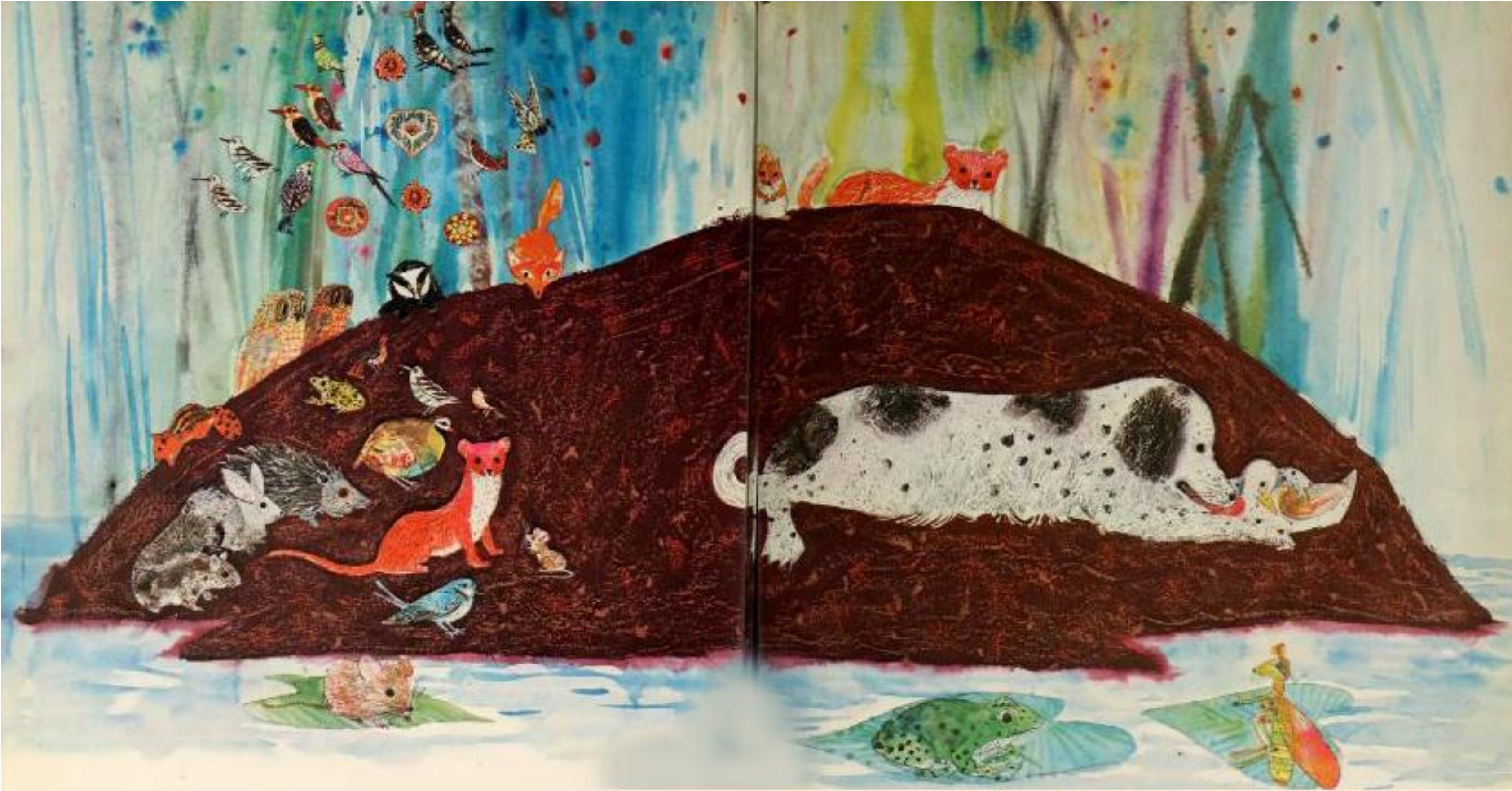
एक दिन सुबह तड़के
दोनों शिकार पर
निकले. जल्द ही वो
एक ताल के पास पहुंचे.
वहां पर बहुत ऊंची-ऊंची
घास उगी थी.

अचानक एक जंगली
बत्तख हवा में उड़ी.
शिकारी ने अपनी
बन्दूक उठाई और
निशाना साधकर गोली
चलाई. कुछ देर बाद
बत्तख ज़ख्मी
होकर ज़मीन पर गिर
पड़ी.



कुत्ता, बत्तख को लाने के लिए दौड़ा हुआ गया. बत्तख की चोट और तकलीफ देखकर, उसे निस्सहाय पाकर कुत्ते को बहुत दुःख हुआ. उसने बड़ी सावधानी से बत्तख को अपने मुंह में उठाया और फिर वो उसे एक छोटे से टापू पर ले गया.





कुत्ते ने बत्तख के ज़ख्म को चाटा. "मैं तुम्हारी देखभाल करूंगा," उसने बत्तख से कहा. फिर कुत्ते ने शिकारी पर एक चाल चली. "मुझे लकड़ी वापिस लाने की ट्रेनिंग दी गई थी," कुत्ते ने खुद से कहा.

"इसलिए मैं अपने मालिक के लिए मुंह में एक लकड़ी वापिस लेकर जाऊँगा." इसलिए उसने बत्तख को वहीँ छोड़ दिया, और अपने मुंह में एक लकड़ी दबाए शिकारी के पास पहुंचा.



इस तरह वो रोज़ाना शिकार करते. हर बार जब शिकारी किसी बत्तख को गोली मारता तो कुत्ता दौड़कर उसे लेने जाता.

हर बार जब कुत्ते को कोई ज़ख़्मी बत्तख मिलती तो वो उसे टापू पर छोड़कर अपने मुंह में एक लकड़ी दबाए वापिस लौटता.

हर रात कुत्ता अपने मालिक की
एक डबलरोटी चुराता था.

उस डबलरोटी को वो टापू पर ले जाकर
ज़ख्मी बत्तखों को खिलाता था.




एक रात शिकारी ने कुत्ते को
डबलरोटी ले जाते हुए देखा. उसने
कुत्ते का पीछा किया और उसे टापू पर
ऊंची घास के पीछे जाते हुए देखा.



शिकारी ने ऊंची घास में से झाँक कर देखा. उसने कुत्ते को ज़ख्मी बत्तखों को डबलरोटी खिलाते हुए देखा. यह देखकर शिकारी को अपने ऊपर बहुत शर्म आई.





अगले दिन सुबह शिकारी उस टापू पर
एक बड़ा पिंजड़ा लेकर गया.

उसने बड़े प्यार से उन ज़ख़्मी बत्तखों को पिंजड़े में रखा.
फिर वो उन्हें अपने घर ले गया.



उसने बत्तखों के ज़ख्मों को धोया और साफ़ किया.

फिर उसने बड़ी लगन से उनकी मलहम-पट्टी की.

जब बत्तखें दुबारा ठीक हुईं फिर शिकारी उन्हें
उसी स्थान पर ले गया जहाँ उसने उन्हें गोली मारी थी.

एक-एक करके उसने सभी बत्तखों को रिहा किया
और वे उगते सूरज की ओर आसमान में उड़ गयीं.

वैसे उस कुत्ते को शिकार करने के लिए ट्रेन किया गया था. पर कुत्ता जल्द ही समझ गया कि वो काम उस जैसे सहृदय कुत्ते के लिए नहीं था.

